**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 6, June - 2025

DOIs:10.2018/SS/202506015 --:-- Research Paper / Article / Review

# भविष्य के शिक्षकों को सशक्त बनाना: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के नज़रिए से शिक्षण अभ्यास की समीक्षा

**Priyanka**
Student-B.Ed. 1st Year, School of Education, Galgotias University, Greater Noida, Uttar Pradesh, India
Email – priyankawalter007@gmail.com

**सारांश :** यह समीक्षा पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उल्लिखित परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के संदर्भ में "बी.एड. छात्र-शिक्षकों के शिक्षण अभ्यास के अनुभवों" को दर्शाता है। यह पत्र कक्षा अभ्यास, स्कूल संस्कृति, शैक्षणिक दृष्टिकोण, मूल्यांकन विधियों और एनईपी 2020 के मूल मूल्यों के बीच संरेखण की खोज करता है। ग्रेटर नोएडा के सावित्रीबाई फुले बालिका इंटर कॉलेज में दस दिवसीय इंटर्नशिप से वास्तविक अवलोकन और अनुभवों के आधार पर, यह समीक्षा भारत में शिक्षक शिक्षा के अवसरों, चुनौतियों और सिफारिशों पर प्रकाश डालती है। समीक्षा में स्कूली जीवन के विभिन्न आयामों की अंतर्दृष्टि शामिल है और यह दर्शाता है कि कैसे शिक्षण इंटर्नशिप भविष्य के शिक्षकों को आवश्यक शैक्षणिक, चिंतनशील और नैतिक क्षमताओं से लैस करके उनके सशक्तिकरण में योगदान करती है।

**मुख्य शब्द :** एनईपी 2020, शिक्षण अभ्यास, शिक्षक शिक्षा, शिक्षाशास्त्र, मूल्यांकन।

## 1. परिचय (INTODUCTION)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक सुधार है। यह शिक्षा के लिए एक समग्र, लचीला, बहु-विषयक दृष्टिकोण की कल्पना करता है, जो भारतीय लोकाचार में निहित है और जिसका उद्देश्य शिक्षण और सीखने दोनों को बदलना है। नीति मजबूत शिक्षण अभ्यास कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक तैयारी, क्षमता निर्माण और व्यावहारिक अनुभव पर जोर देती है। यह समीक्षा पत्र 5 मई से 17 मई 2025 तक आयोजित शिक्षण इंटर्नशिप पर गंभीर रूप से प्रतिबिंबित करता है, जो अनुभवों को NEP 2020 के दृष्टिकोण से जोड़ता है। लक्ष्य यह विश्लेषण करना है कि वास्तविक स्कूल स्थितियों के तहत कक्षा का प्रदर्शन छात्र-शिक्षकों के बीच NEP-संरेखित दक्षताओं के कार्यान्वयन का समर्थन कैसे करता है।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य (OBJECTIVES OF THE STUDY)

- बी.एड. छात्र-शिक्षकों के शिक्षण अभ्यास अनुभवों का मूल्यांकन करना, विशेष रूप से उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख शिक्षकीय अवधारणाओं के आलोक में समझना।
- कक्षा शिक्षण, विद्यालयीय संस्कृति, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और शैक्षिक दृष्टिकोणों के साथ एनईपी 2020 के मूल तत्वों के सामंजस्य की पड़ताल करना।
- प्रशिक्षण अवधि के दौरान आने वाली प्रमुख चुनौतियों, व्यवहारिक अनुभवों और अवसरों का विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- यह समझना कि शिक्षण अभ्यास भावी शिक्षकों को कैसे शैक्षणिक दक्षताओं, नैतिक मूल्यों और चिंतनशील सोच से सुसज्जित करता है।
- शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु विद्यालय आधारित अनुभवों के आधार पर संभावित सुधारात्मक उपायों और सिफारिशों को चिन्हित करना।

## 3. शोध विधि (RESEARCH METHOD)

यह शोधपत्र एक अनुभवात्मक और गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षु शिक्षकों के शिक्षण अभ्यास अनुभवों का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से जब उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के संदर्भ में समझा जाए। अध्ययन का प्राथमिक आधार **ग्रेटर नोएडा स्थित सावित्रीबाई फुले बालिका इंटर कॉलेज** में 5 से 17 मई 2025 तक संपन्न दस दिवसीय विद्यालय इंटर्नशिप है, जिसमें प्रशिक्षुओं ने कक्षा शिक्षण, पाठ योजना निर्माण, मूल्यांकन प्रक्रियाओं, सह-शैक्षणिक गतिविधियों और स्कूल

संस्कृति का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। साथ ही, शोध को सैद्धांतिक रूप से समृद्ध करने के लिए नीति दस्तावेजों (जैसे एनईपी 2020[1] और NIPUN भारत[2]), शैक्षणिक जर्नलों, शोध लेखों और प्रासंगिक ऑनलाइन सामग्री का विस्तृत अध्ययन किया गया। यह अध्ययन गैर-सांख्यिकीय स्वरूप का है, जिसमें अनुभवों, अवलोकनों और नीति-संगत विश्लेषणों के माध्यम से निष्कर्ष निकाले गए हैं। इस समीक्षा का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षण अभ्यास किस प्रकार प्रशिक्षु शिक्षकों को संवेदनशील, दक्ष और नवाचारी शिक्षक के रूप में विकसित करने में सहायक होता है।

## 4. संदर्भ और सेटिंग (CONTEXT AND SETTING)

यह शिक्षण अभ्यास **ग्रेटर नोएडा के सावित्रीबाई फुले बालिका इंटर कॉलेज**[3] में किया गया, जो सीबीएसई से संबद्ध लड़कियों का स्कूल है। स्कूल विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा प्रदान करता है, जो कक्षा की विविधता को समझने के लिए एक समृद्ध दृश्य प्रदान करता है। इंटर्नशिप में अवलोकन, पाठ योजना, शिक्षण, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में भागीदारी, सुबह की सभाएँ, स्टाफ मीटिंग और मेंटर और विद्यार्थियों के साथ नियमित बातचीत शामिल थी। स्कूल का नेतृत्व सहायक था और नवाचार को प्रोत्साहित करता था, जिससे सीखने का माहौल अनुकूल बना।

## 5. शिक्षण अभ्यास के उद्देश्य (OBJECTIVES OF TEACHING PRACTICE)

बी.एड. कार्यक्रमों में शिक्षण अभ्यास घटक के प्राथमिक उद्देश्यों में शामिल हैं:

- सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटना।
- शैक्षणिक और चिंतनशील कौशल विकसित करना।
- स्कूल संस्कृति, कक्षा की गतिशीलता और छात्र विविधता को समझना।
- एनईपी 2020 के साथ संरेखित नवीन शिक्षण-अधिगम रणनीतियों का अभ्यास करना।
- शिक्षक पहचान, व्यावसायिकता और नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- छात्र मूल्यांकन, कक्षा प्रबंधन और सामग्री वितरण में अनुभव प्राप्त करना।

## 6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षक शिक्षा या प्रशिक्षण से संबंधित प्रमुख प्रावधान (NATIONAL EDUCATION POLICY 2020: KEY PROVISIONS RELATED TO TEACHER EDUCATION OR TRAINING)

एनईपी 2020 शिक्षक तैयारी के लिए प्रासंगिक निम्नलिखित पहलुओं पर जोर देता है:

- 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. के माध्यम से विषय ज्ञान और शिक्षण का एकीकरण।
- प्रभावी शिक्षण के लिए बहुभाषी और बहु-विषयक दृष्टिकोण।
- योग्यता-आधारित शिक्षण और प्रारंभिक मूल्यांकन विधियाँ।
- प्रारंभिक शिक्षा में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) पर जोर।
- अनुभवात्मक और पूछताछ-आधारित सीखने का उपयोग।
- प्रौद्योगिकी और मिश्रित शिक्षण वातावरण का एकीकरण।
- निरंतर व्यावसायिक विकास और शिक्षक स्वायत्तता।

## 7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षक तैयारी के प्रमुख आयाम (NATIONAL EDUCATION POLICY 2020: KEY DIMENSIONS OF TEACHER PREPARATION)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा को एक समग्र, व्यावहारिक और बहु-विषयक प्रक्रिया के रूप में पुनर्परिभाषित करती है। यह नीति भविष्य के शिक्षकों को विषयवस्तु ज्ञान, शैक्षणिक कौशल और नैतिक मूल्यों से लैस करने के लिए चार वर्षीय एकीकृत बी.एड., तकनीकी एकीकरण, अनुभवात्मक अधिगम और सतत व्यावसायिक विकास जैसे प्रमुख पहलुओं पर विशेष बल देती है।

- **विषय ज्ञान और शिक्षण विधियों का समन्वय (Integrating Subject Knowledge and Teaching Methods)**: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह प्रस्तावित करती है कि शिक्षक शिक्षा को एकीकृत, बहु-विषयक और शोध-आधारित बनाया जाए। इसके अंतर्गत चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम की परिकल्पना की गई है, जिसमें स्नातक स्तर के विषय ज्ञान और शिक्षण कौशलों को समन्वित रूप से पढ़ाया जाएगा। यह प्रशिक्षण भावी शिक्षकों को न केवल विषय विशेषज्ञता प्रदान करता है, बल्कि उन्हें कक्षा प्रबंधन, बाल मनोविज्ञान और समावेशी शिक्षण की विधियाँ भी सिखाता है[4]।

**उदाहरण**: एक बी.एड. छात्र विज्ञान विषय में अध्ययन करते हुए साथ ही 'अनुभव आधारित शिक्षण' और 'प्रयोगशाला गतिविधियों' की कार्यशालाओं में भाग लेता है।

[1] NEP_Final_English.pdf
[2] NIPUN_Bharat_stakeholders_roles_responsibilities.pdf
[3] SAVITRI BAI PHULE BALIKA INTER COLLEGE – Kasna Greater Noida UP
[4] NEP 2020, अध्याय 5.5: "Reforming Curricula and Pedagogy of Teacher Education."

- **बहुभाषिक और बहु-विषयक शिक्षण की दिशा में पहल (Initiatives towards multilingual and multidisciplinary teaching)** :- नीति में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि प्रभावी शिक्षण के लिए स्थानीय भाषाओं और विषयों का परस्पर समन्वय आवश्यक है। शिक्षकों को मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण की क्षमता के साथ-साथ विषयों के अंतःसंबंधों को समझने की दक्षता होनी चाहिए[5]।

**उदाहरण**: एक शिक्षक गणित और विज्ञान को एक साथ पढ़ाते समय स्थानीय कहावतों या जीवन से जुड़े उदाहरणों का उपयोग करता है।

- **योग्यता-आधारित अधिगम और प्रारंभिक मूल्यांकन का महत्व (Importance of competency-based learning and formative assessment)** :- **NEP 2020** में रटंत प्रणाली से हटकर 'सीखने की योग्यता' और 'सीखने के परिणामों' पर आधारित शिक्षण की वकालत की गई है। इसमें निरंतर और समेकित मूल्यांकन विधियों (**CCE**) को प्राथमिकता दी गई है[6]।

**उदाहरण**: एक शिक्षक हिंदी व्याकरण सिखाते समय कहानी लेखन या संवाद निर्माण जैसी गतिविधियों का प्रयोग करता है।

- **मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) की नींव मजबूत करना (Strengthening the foundations of Basic Literacy and Numeracy (FLN))**[7]:- **NEP 2020** का विशेष बल है कि सभी बच्चों को कक्षा **3** तक बुनियादी भाषा और गणना कौशल में दक्ष बनाया जाए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इस दिशा में पुनर्गठित किया जा रहा है ताकि शिक्षक बाल-केंद्रित और खेल आधारित शिक्षण अपनाएं[8]।

**उदाहरण**: शिक्षक 'गिनती सिखाने' के लिए रंग-बिरंगे कंकड़ या बच्चों के खिलौनों का उपयोग करता है।

- **अनुभवात्मक एवं खोजपरक अधिगम की भूमिका(Role of experiential and inquiry-based learning)**:- शिक्षण को अधिक जीवंत और छात्रों की जिज्ञासा के अनुकूल बनाने के लिए **NEP** अनुभवात्मक और पूछताछ आधारित अधिगम पर बल देती है। इस पद्धति में छात्र स्वयं सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं[9]।

**उदाहरण**: एक सामाजिक विज्ञान शिक्षक 'जल संकट' पर परियोजना कार्य देता है।

- **प्रौद्योगिकी और मिश्रित शिक्षण का समावेश (Incorporation of technology and blended learning)**:- नीति के अनुसार शिक्षकों को डिजिटल साक्षर बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे ऑनलाइन, ऑफलाइन और मिश्रित शिक्षण रणनीतियों को अपनाकर बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पूरा कर सकें[10]।

**उदाहरण**: एक शिक्षक 'दीक्षा ऐप' और Google Classroom का उपयोग करता है।

- **निरंतर व्यावसायिक विकास और शिक्षक स्वायत्तता(Continuous professional development and teacher autonomy)**:- शिक्षकों के लिए नीति में यह अपेक्षा की गई है कि वे आजीवन अधिगमकर्ता बनें। इसके लिए नियमित प्रशिक्षण, वर्कशॉप और ICT आधारित शिक्षण सामग्रियों तक उनकी पहुँच सुनिश्चित की जाए[11]।

**उदाहरण**: एक शिक्षक 'कक्षा ब्लॉग' शुरू करता है, जहाँ छात्र सृजनात्मक लेखन करते हैं।

## 8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नजरिए से शिक्षण अभ्यास पर विचार (REFLECTIONS ON TECAHING PRACTICE FROM THE PERSPECTIVES OF NATIONAL EDUCATION POLICY 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है, जिसमें शिक्षण को अनुभव-आधारित, समावेशी और बहु-विषयक बनाने पर जोर दिया गया है। इस नीति की दृष्टि से किए गए शिक्षण अभ्यास के अनुभव न केवल कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाते हैं, बल्कि भावी शिक्षकों को व्यावसायिक दक्षताओं, नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक समझ से भी परिपूर्ण करते हैं।

- **पाठ योजना एवं शिक्षण शैलियाँ (Lesson Planning and Pedagogy)** :- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक, खोजपरक और दक्षता-आधारित अधिगम (**Competency-Based Learning**) को प्रोत्साहित किया गया है[12]। इंटर्नशिप अवधि के दौरान, प्रशिक्षु शिक्षकों द्वारा बनाई गई पाठ योजनाओं में कहानी-प्रवचन, समूह चर्चा, संवादात्मक प्रश्नोत्तर, जीवन-संगत उदाहरणों, नाट्य रूपांतरण और चार्ट, फ्लैशकार्ड एवं डिजिटल प्रेज़ेंटेशन जैसे शिक्षण सहायक उपकरणों का उपयोग किया गया। शिक्षण में सहयोगात्मक और रचनावादी (**Constructivist**) दृष्टिकोण अपनाए गए जिससे विद्यार्थियों की भागीदारी और सीखने के स्तर में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। समस्याओं के समाधान, भूमिकानिर्माण (**Role-play**) और

[5] NEP 2020, अध्याय 4.12: "Promotion of Multilingualism and the Power of Language in Teaching and Learning."

[6] NEP 2020, अध्याय 4.34: "Transforming the Assessment System to Promote Learning and Development."

[7] NEP 2020

[8] NIPUN Bharat Guidelines, 2021; NEP 2020, अध्याय 2.

[9] NEP 2020, अध्याय 4.6–4.7.

[10] NEP 2020, अध्याय 23; DIKSHA Portal (MHRD, India).

[11] NEP 2020, अध्याय 5.7–5.9.

[12] NEP 2020, MoE, 2020, Para 4.5

सहपाठी शिक्षण जैसी विधियाँ विद्यार्थियों के अधिगम को और भी प्रभावी बनाती दिखीं। हालांकि, कुछ वर्गों में स्मार्ट क्लासरूम या डिजिटल बोर्ड की अनुपलब्धता ने डिजिटल विभाजन (**Digital Divide**) की वास्तविकता को उजागर किया।

- **समावेशी और बहुभाषिक शिक्षा (Inclusive and Multilingual Education)**:- एनईपी 2020 की प्रमुख सिफारिशों में से एक है कि कक्षा में बहुभाषिकता और समावेशिता को बढ़ावा दिया जाए[13]।अभ्यास के दौरान अधिकांश शिक्षण हिंदी में किया गया, जिसमें कभी-कभी अंग्रेज़ी का भी प्रयोग हुआ—जो विद्यालय की स्थानीय भाषायी पृष्ठभूमि के अनुकूल था। प्रशिक्षु शिक्षकों ने समावेशी अभ्यासों जैसे कि कमजोर विद्यार्थियों को उच्च उपलब्धि करने वालों के साथ समूहित करना, को अपनाने का प्रयास किया। सामाजिक रूप से वंचित पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों को समूह गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। हालांकि, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों (**Special Educational Needs - SEN**) के संदर्भ में सीधे अनुभव सीमित रहा।
- **मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ (Assessment Practices)**:- शिक्षण अभ्यास के दौरान मूल्यांकन के पारंपरिक तरीकों—जैसे मौखिक प्रश्नोत्तर और लिखित परीक्षा—का प्रमुखता से उपयोग हुआ। हालांकि, प्रशिक्षुओं ने एनईपी 2020 द्वारा सुझाई गई समग्र (**Holistic**) और निरंतर (**Continuous/Formative**) मूल्यांकन रणनीतियाँ भी अपनाईं, जिनमें सहपाठी मूल्यांकन (**Peer-assessment**), आत्म-प्रतिक्रिया (**Self-reflection**), समूह क्विज़, रूब्रिक आधारित मूल्यांकन तथा खुले-आम प्रश्नों का समावेश रहा[14]। प्रतिदिन सीखने के परिणामों की समीक्षा की गई और विद्यार्थियों से त्वरित मौखिक प्रतिक्रिया प्राप्त कर शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार किया गया।
- **सह-पाठ्यक्रम और समग्र विकास (Co-Curricular and Holistic Development)**:- एनईपी **2020** शैक्षिक विकास को केवल अकादमिक सीमाओं में न बांधकर समग्रता में देखती है[15]। अभ्यास के दौरान प्रशिक्षुओं ने प्रार्थना सभा, वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिता और विद्यार्थी क्लबों (जैसे **इको क्लब, हेरिटेज क्लब**) में सक्रिय भागीदारी निभाई। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, आत्म-अभिव्यक्ति और नागरिक चेतना का विकास हुआ। इन अनुभवों ने शिक्षक-प्रशिक्षुओं के लिए शैक्षिक जीवन को एक व्यापक सामाजिक अनुभव के रूप में देखने की दृष्टि दी।
- **जीवन-कौशल एवं मूल्य-शिक्षा का एकीकरण (Integration of Life Skills and Value Education)**:- एनईपी जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने पर बल देती है[16]। शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रशिक्षु शिक्षकों ने सहानुभूति, सहयोग, आलोचनात्मक चिंतन जैसे जीवन कौशलों को भूमिकानिर्माण, पोस्टर निर्माण, कहानीवाचन, समूह चर्चाओं और सामूहिक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में विकसित किया। कक्षाओं में राष्ट्रीय एकता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, करुणा और आपसी सम्मान जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में नैतिक समझ और आपसी संवाद कौशल में स्पष्ट प्रगति देखी गई।

## 9. प्रशिक्षण अवधि के दौरान आने वाली चुनौतियाँ (CHALLENGES FACED DURING THE TRAINING PERIOD)

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु शिक्षकों को कई व्यावहारिक एवं शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जो न केवल उनके शिक्षण कौशल की परीक्षा थीं, बल्कि उनके धैर्य, अनुकूलनशीलता और रचनात्मकता की भी मांग करती थीं।

1. **बड़ी कक्षा की संख्या के कारण व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन रहा (Large class sizes make it difficult to provide individual attention)**:- अधिकांश कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी, जिससे हर विद्यार्थी की व्यक्तिगत सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करना चुनौतीपूर्ण बन गया। इससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है क्योंकि शिक्षक हर विद्यार्थी की समझ को अलग-अलग स्तर पर नहीं परख पाते[17]।
2. **समय की कमी के कारण विभेदित शिक्षण को लागू करना संभव नहीं हो पाया(Due to lack of time, it was not possible to implement differentiated teaching)**:-सीमित अवधि में पाठ्यक्रम की मांगों को पूरा करने की वजह से प्रशिक्षु शिक्षक विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के लिए भिन्न शिक्षण रणनीतियाँ नहीं अपना सके।

**उदाहरण**: कमजोर विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता (समझ)देने या उच्च क्षमतावान छात्रों को चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ देने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाया।

---

[13] NEP 2020, Para 4.11
[14] NEP 2020, Para 4.34
[15] NEP 2020, Para 4.27
[16] NEP 2020, Para 4.28
[17] NEP 2020 भी इस ओर ध्यान दिलाती है कि शिक्षकों को ऐसा प्रशिक्षण मिलना चाहिए जिससे वे विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें (NEP 2020, Para 5.6).

3. **तकनीकी शिक्षण उपकरणों की अपर्याप्त उपलब्धता या त्रुटि(Inadequate availability or lack of technical learning tools)** :- कुछ कक्षाओं में प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड या इंटरनेट जैसे डिजिटल संसाधनों की कमी देखी गई, जिससे डिजिटल सामग्री आधारित शिक्षण बाधित हुआ[18]।
4. **कुछ मामलों में मेंटर शिक्षकों से नियमित प्रतिक्रिया नहीं मिल पाई(In some cases, regular feedback from mentor teachers was not available)**:-प्रशिक्षु शिक्षक नियमित मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं, लेकिन कुछ स्कूलों में मेंटर शिक्षक व्यस्तताओं के कारण समय पर प्रतिक्रिया नहीं दे सके, जिससे सुधारात्मक सीखने में बाधा आई।

सुझाव: इंटर्नशिप में एक संरचित फीडबैक सिस्टम की आवश्यकता स्पष्ट रूप से महसूस हुई।

5. **विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न सीखने की गति से पाठ योजना की गति में संतुलन बनाना कठिन रहा(It was difficult to balance the pace of the lesson plan with the different learning speeds of students)**:- कुछ विद्यार्थी तेज गति से सीखते थे जबकि कुछ को अधिक समय की आवश्यकता थी। प्रशिक्षु शिक्षकों को पूरे वर्ग के लिए उपयुक्त गति बनाए रखना चुनौतीपूर्ण लगा।
6. **सह-पाठ्यक्रम और शैक्षणिक उत्तरदायित्वों में संतुलन बनाना कभी-कभी भारी पड़ा(Balancing co-curricular and academic responsibilities sometimes proved to be difficult)**:- शिक्षण के साथ-साथ स्कूल की सह-शैक्षिक गतिविधियों (**जैसे**- भाषण प्रतियोगिता, प्रार्थना सभा) में भागीदारी ने प्रशिक्षुओं पर समय और ऊर्जा का दबाव बढ़ाया।

**उदाहरण**: एक ही दिन में पाठ पढ़ाना, मूल्यांकन करना और सांस्कृतिक गतिविधि के आयोजन में भाग लेना, उन्हें मानसिक व शारीरिक रूप से थका देता था।

## 10. सकारात्मक निष्कर्ष एवं अधिगम (POSITIVE OUTCOMES AND LERANING)

शिक्षण अभ्यास केवल शैक्षणिक सिद्धांतों को लागू करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भावी शिक्षकों के समग्र व्यावसायिक विकास का एक महत्वपूर्ण चरण भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुरूप यह अनुभव उन्हें आत्मचिंतन, कौशल विस्तार और कक्षा-आधारित व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

**निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से उन प्रमुख सकारात्मक पहलुओं को रेखांकित किया गया है, जिन्हें प्रशिक्षुओं ने अपनी इंटर्नशिप के दौरान व्यावहारिक रूप से अनुभव किया और सीखा:**

- प्रशिक्षण के दौरान कक्षा प्रबंधन और पाठ प्रस्तुति में आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- विद्यार्थियों की विविधताओं और कक्षा की कार्यप्रणाली को समझने की बेहतर समझ विकसित हुई।
- दैनिक जर्नल लेखन और साथियों की प्रतिक्रिया के माध्यम से चिंतनशील शिक्षण (Reflective Practice) की आदत विकसित हुई।
- जिज्ञासा-आधारित अधिगम (Inquiry-Based Learning) जैसी एनईपी 2020-उन्मुख शिक्षण रणनीतियों को व्यावहारिक रूप से अपनाने का अवसर मिला।
- संवाद, नेतृत्व, और समूह सहयोग जैसे महत्वपूर्ण पेशेवर कौशलों में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
- विद्यालय परिवेश में नैतिक मुद्दों से रूबरू होने का अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे पेशेवर मूल्यों की समझ और सुदृढ़ हुई।

## 11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के साथ इंटर्नशिप का अनुरूपता (ALIGNMENT OF INTERNSHIP WITH THE GOALS OF NEP 2020)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा को समावेशी, बहुभाषी, कौशल-आधारित और छात्र-केंद्रित बनाने पर बल देती है। बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा की गई इंटर्नशिप इस दृष्टिकोण को आंशिक रूप से प्रतिबिंबित करती है। विद्यालयीय अभ्यास के दौरान कुछ प्रयास ऐसे किए गए जो एनईपी के प्रमुख लक्ष्यों की ओर संकेत करते हैं, हालांकि संसाधनों और संरचनात्मक चुनौतियों के कारण इसकी पूर्ण उपलब्धि संभव नहीं हो पाई।

**मुख्य बिंदु**:

- कई कक्षाओं में विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण विधियाँ अपनाई गईं, जिससे विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता और रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिला।
- सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को पाठ्य योजना में सम्मिलित कर विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में सार्थक प्रयास किए गए।

[18] NEP 2020 तकनीकी शिक्षा के एकीकरण पर बल देती है (NEP 2020, Para 23.4), परंतु जमीनी हकीकत में डिजिटल डिवाइड एक बड़ी समस्या बनी हुई है।

- बहुभाषी और समावेशी शिक्षण रणनीतियों को अपनाने की पहल की गई, हालांकि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए संसाधनों की सीमाएँ सामने आईं।
- आकलन में पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ प्रारूपिक और दक्षता-आधारित मूल्यांकन विधियों का भी प्रयोग किया गया।
- तकनीकी उपकरणों की सीमित उपलब्धता के कारण डिजिटल शिक्षण का उपयोग अपेक्षाकृत कम रहा, जिससे **Blended Learning**[19] की संभावनाएँ सीमित रहीं।

## 12. शिक्षण अभ्यास को प्रभावी बनाने हेतु अनुशंसाएँ (RECOMMENDATIONS FOR STRENGTHENING TEACHING PRACTICE)

शिक्षण अभ्यास, भावी शिक्षकों को वास्तविक शैक्षिक परिवेश से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, जिससे वे शिक्षण की जमीनी चुनौतियों और अवसरों को अनुभव कर पाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अपेक्षाओं के अनुरूप इस अनुभव को अधिक प्रभावशाली, व्यावहारिक और तकनीक-सक्षम बनाने के लिए कुछ ठोस सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये सिफारिशें न केवल प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करेंगी, बल्कि शिक्षक-शिक्षण को समकालीन शैक्षणिक मांगों के अनुरूप भी बनाएंगी।

**सिफारिशें**:

- इंटर्नशिप प्रारंभ होने से पहले एनईपी 2020 की मूल अवधारणाओं और मिश्रित अधिगम (**Blended Learning**) तकनीकों पर केंद्रित गहन ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए जाएं।
- शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों और विद्यालयों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करते हुए एनईपी-संगत इंटर्नशिप योजनाएँ तैयार की जाएं।
- प्रशिक्षुओं के सतत मार्गदर्शन हेतु कक्षा अवलोकन मापदंड (**Rubrics**), नियमित मेंटरिंग एवं प्रतिक्रिया (**Feedback**) सत्रों की प्रभावी व्यवस्था की जाए।
- डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षुओं को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (**ICT**) उपकरणों के उपयोग और डिजिटल शिक्षण विधियों का आधारभूत प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- कक्षा में व्यक्तिगत ध्यान को बढ़ाने के लिए विद्यार्थी -शिक्षक अनुपात को संतुलित किया जाए या सह-शिक्षण (**Peer-Teaching**) की व्यवस्था की जाए।
- समावेशी शिक्षा की भावना को साकार करने हेतु प्रशिक्षुओं को विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की पहचान, सहायता रणनीतियों और शिक्षण विविधता के व्यावहारिक अनुभव प्रदान किए जाएं।

## 13. निष्कर्ष (CONCLUSION)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नवाचारी और दूरदर्शी दृष्टिकोण के संदर्भ में यह शिक्षण अभ्यास बी.एड. छात्र-शिक्षकों के लिए न केवल व्यावहारिक अनुभव का माध्यम रहा, बल्कि यह एक चिंतनशील, अनुभवात्मक और व्यावसायिक रूप से समृद्ध यात्रा भी सिद्ध हुई। यह इंटर्नशिप समग्र शिक्षक निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव थी, जिसने भविष्य के शिक्षकों में राष्ट्र-निर्माण की भावना, नेतृत्व क्षमता और मूलभूत शैक्षणिक दक्षताओं का विकास किया।

*हालांकि, सीमित भौतिक संसाधन, मार्गदर्शन की असमानता और विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताएँ जैसी चुनौतियाँ सामने आईं, फिर भी यह अनुभव छात्र-केंद्रित, नैतिक-मूल्य आधारित और आत्ममंथन पर आधारित शिक्षण विधियों को अपनाने हेतु एक प्रभावशाली मंच के रूप में उभरा।* यदि शैक्षणिक नीतियों का निरंतर समर्थन और संस्थानों का सक्रिय सहयोग बना रहे, तो ऐसी विद्यालय-आधारित इंटर्नशिप न केवल शिक्षक शिक्षा को प्रासंगिक बनाएंगी, बल्कि शिक्षकों को व्यवहारिक और परिवर्तनकारी नेतृत्व के लिए भी तैयार करेंगी।

इस अनुभव से प्राप्त शिक्षा और दृष्टिकोण ऐसे शिक्षकों के निर्माण में सहायक होंगे, जो न केवल प्रभावशाली कक्षा-शिक्षण में सक्षम होंगे, बल्कि भारत की शिक्षा प्रणाली में एनईपी 2020[20] की मूल भावना को भी साकार कर सकेंगे।

[19] *Blended learning is an educational approach that combines traditional classroom learning with online learning. It allows learners to engage in both face-to-face instruction and digital platforms, enhancing the educational experience by making it more effective and personalized. This method is also referred to as hybrid learning or technology-mediated instruction, and it aims to integrate the best aspects of both in-person and online education.*

[20] NEP_final_HINDI_0.pdf

## REFERENCES

1. Kumar. (2022). Reflections on teaching practicum: Lessons from Indian B.Ed. colleges. *Journal of Teacher Development Studies, 8*(3), 45–62.
2. K. Kumar. (2004). *What is worth teaching?* Orient Blackswan.
3. Ministry of Education, Government of India. (2020). *National education policy 2020*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf
4. Ministry of Education. (2020). *NEP 2020: Para 4.27*. Government of India.
5. National Council for Teacher Education (NCTE). (2014). *National curriculum framework for teacher education*. NCTE.
6. National Council for Teacher Education (NCTE). (2021a). *Guidelines for school internship in B.Ed. programmes*. NCTE.
7. National Council for Teacher Education (NCTE). (2021b). *Internship guidelines for B.Ed. program*. NCTE.
8. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2019). *Education for peace and value education manual*. NCERT.
9. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2020). *Art integrated learning guidelines*. NCERT.
10. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2021a). *Assessment for learning*. NCERT.
11. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2021b). *Guidelines for holistic progress card*. NCERT.
12. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2021c). *Teacher education curriculum framework*. NCERT.
13. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2021d). *Teacher guidelines and handbooks*. NCERT.
14. Savitribai Phule Balika Inter College, Greater Noida. (2025). *School internship records and observations* (Unpublished field notes).
15. UNESCO. (2019). *Teacher preparation and school environment report*. UNESCO.
16. UNESCO. (2021a). *Inclusion and education: All means all*. UNESCO.
17. UNESCO. (2021b). *Teachers of tomorrow: Policy and practice in the post-COVID era*. UNESCO.
18. Yadav, R. (2023). Transforming teacher education: The NEP vision. *Indian Journal of Education and Practice, 12*(1), 33–42.
19. Zeichner, K. M. (1983). Alternative paradigms of teacher education. *Journal of Teacher Education, 34*(3), 3–9. https://doi.org/10.1177/002248718303400302
20. Verma, K., & Shankar, R. (2023). Redefining teacher education: The power of multidisciplinary approaches. *Mazedan International Journal of Social Science and Humanities, 4*(4), 16–21.
21. What is foundational literacy and numeracy (FLN) and why it matters? (n.d.). *LinkedIn*. https://www.linkedin.com/pulse/what-foundational-literacy-numeracy-fln-why-matters- (Accessed June 23, 2025)